

# ज्ञानशाला ज्ञानार्थी पाठ्यक्रम - भाग 3



घर-घर जागे सदसंस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार



## आशीर्वचन

तेरापंथ समाज की एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है - ज्ञानशाला। इसके माध्यम से बालक-बालिकाओं में जैन तत्त्व विद्या को आत्मसात् कराने तथा सुसंस्कारों के बीजारोपण का प्रयास किया जाता है। यह गतिविधि बहुत निष्पत्तिपूर्ण प्रतीत हो रही है। जो पुरुष तथा महिला कार्यकर्ता इस गतिविधि के पवित्र संचालन में सहयोग देते हैं, वे बाल पीढ़ी के निर्माण में अपना योगदान देते हैं।

ज्ञानशाला को मैं अत्यंत उपयोगी मानता हूँ, इसलिए साधु-साध्वियाँ, समण श्रेणी, श्रावक-श्राविकाएँ -- सब इस गतिविधि को भावात्मक एवं क्रियात्मक यथोचित सहयोग देने का प्रयास करें।

शुभाशंसा।

5 मई, 2012  
बालोतरा

आचार्य महाश्रमण

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी पाठ्यक्रम - भाग 3

# शिशु संस्कार बोध



संपादन :

मंत्री मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

मुनि उदित कुमार

प्रकाशन एवं नियोजन :

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

(ज्ञानशाला प्रकोष्ठ)

3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700001

फोन : (033) 2235 7956 / 2234 3598

इमेल : [info@jstmahasabha.org](mailto:info@jstmahasabha.org)

वेबसाइट : [www.jstmahasabha.org](http://www.jstmahasabha.org)

संस्करण : 2016

घर-घर जागे सदसंस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार



- आज का शिशु ही कल का समाज है।
- माता-पिता का व्यवहार ही शिशु की संस्कारशाला है।
- धार्मिक संस्कारों से ही व्यवहार व अध्यात्म शुद्ध रह सकता है।
- शिशु अनुकरणप्रिय है। उसे जैसा बनाना चाहते हो, वैसा पहले खुद बनो।
- शिशु वह सर्वग्राही भूमि है, जिस पर सब प्रकार के बीज बोये जा सकते हैं।
- शिशु में असीम क्षमता है, उसे नजरअंदाज मत करो, उसके विकास में सहायक बनो।
- जन्म के समय शिशु न अपराधी है और न उपकारी। उसमें ये संस्कार यहीं से मिलते हैं।
- शिशु स्वयं में एक कोरा (सफेद) कागज होता है। उस पर चाहे जैसे संस्कारों के चित्र उकेरे जा सकते हैं।
- शिशु स्वयं में एक स्वच्छ आरिसा (कॉच) है, जिसमें माता, पिता व पूरे परिवार के व्यवहार का प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

– मंत्री मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

### अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अनुक्रम	पृष्ठ
1.	अणुव्रत गीत	3
2.	महाप्राण गुरुदेव	4
3.	पच्चीस बोल (9-13)	6
4.	चउव्वीसत्थव	8
5.	भिक्षु अष्टकम्	9
6.	आचार्य भिक्षु	11
7.	सामान्य ज्ञान	13
8.	प्रेक्षाध्यान : चैतन्य केन्द्र	16

**SHISU SANSKAR BODH (VOLUME - 3)**  
**Rs. 10/-**



## पाठ 1

### अणुव्रत गीत

### ANUVRAT GEET

संयममय जीवन हो।

Sanyamamaya Jeevan Ho.

नैतिकता की सुर-सरिता में

Naitiktā ki Sur-Sarītā Mein

जन-जन मन पावन हो।।

Jan-Jan Man Pāvan Ho.

1. अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा,  
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा।  
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो।।
2. मैत्री-भाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढ़ता जाए,  
समता-सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता जाए।  
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित, मात्र शुद्ध साधन हो।।
3. विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी,  
नर हो नारी, बने नीतिमय जीवनचर्या सारी।  
कथनी-करनी की समानता, में गतिशील चरण हो।।
4. प्रभु बन करके ही हम प्रभु की, पूजा कर सकते हैं,  
प्रामाणिक बनकर ही संकट-सागर तर सकते हैं।  
आज अहिंसा-शौर्य-वीर्य संयुत जीवन-दर्शन हो।।
5. सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,  
'तुलसी' अणुव्रत सिंहनाद सारे जग में प्रसरेगा।  
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो।।

1. Apne Se Apnā Anushāsan,  
Anuvrat Kee Paribhāshā,  
Varna, Jāti Yā Sampradāy  
Se Mukta Dharma Kee Bhāshā.  
Chote-Chote Sankalpon Se  
Mānas Parivartan Ho.
2. Maitree-Bhāv Hamārā Sabse  
Pratidin Badhtā Jāye  
Samtā-Sah-Astitva,  
Samanvay-Neeti Safalta Pāye,  
Shuddh Sādhyā Ke liye Niyojit,  
Mātra Shuddh Sādhan Ho.
3. Vidhyārthee Yā Shikshak Ho,  
Majdoor Aur Vyāpāree  
Nar Ho Nāree, Bane Neetimaya  
Jeevancharyā Sāree.  
Kathnee Karnee Kee Samāntā  
Mein Gatisheel Charan Ho.
4. Prabhu Ban Karke Hi Ham  
Prabhu Kee, Poojā Kar Sakte Hain.  
Prāmānik Bankar Hi Sankat -  
Sāgar Tar Sakte Hain.  
Āj Ahimsā Shourya Veerya  
Sanyut Jeevan Darshan Ho.
5. Sudhre Vyakti, Samāj Vyakti Se,  
Rāshtra Swayam Sudhregā.  
'Tulsi' Anuvrat Sinhnād  
Sāre Jag Mein Prasaregā.  
Mānviya Āchār-Sanhitā Mein  
Arpit Tan Man Ho.

**आपको करना है :**

**You have to do :**

1. अणुव्रत गीत क्रमबद्ध व लयबद्ध सीखना है।

Anuvrat Geet to be learnt in tune rhythmically.



## पाठ 2

महाप्राण गुरुदेव

MAHĀPRĀN GURUDEV

- |   |  |
|---|--|
| कैसी वह कोमल काया रे, महाप्राण गुरुदेव।<br>पुष्पों ने शीश झुकाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।<br>कंचन सी कोमल काया रे, महाप्राण गुरुदेव।। | <b>Kaisi Wah Komal Kāyā Re,<br/>Mahāprān Gurudev.<br/>Pushpon Ne Sheesh Jhukāyā Re,<br/>Mahāprān Gurudev.<br/>Kanchan See Komal Kāyā Re,<br/>Mahāprān Gurudev.</b> |
| 1. कानों की छटा निराली, आंखें इमरत की प्याली।<br>किसने सौंदर्य सझाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।   | 1. Kānon Kee Chhatā Nirālee,<br>Ānkhen Imrat Kee Pyālee,<br>Kisne Soundarya Sajhāyā Re,<br>Mahāprān Gurudev.   |
| 2. माधुर्य कंठ में घोला, ममता को किसने तोला।<br>वात्सल्य मूर्त बन पाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।                                       | 2. Mādhurya Kanth Mein Gholā,<br>Mamtā Ko Kisne Tolā,<br>Vātsalya Moort Ban Pāyā Re,<br>Mahāprān Gurudev.  |
| 3. तुमने जो ग्रन्थ गढ़ा है, वह सबके शीश चढ़ा है।<br>शाश्वत का स्वर लहराया रे, महाप्राण गुरुदेव।।                                    | 3. Tumne Jo Granth Gadhā Hai,<br>Wah Sabke Sheesh Chadhā Hai,<br>Shāshwat Kā Swar Lahrāyā Re,<br>Mahāprān Gurudev.   |
| 4. शासन को खूब संवारा, अनुशासन गजब निहारा।<br>शीतल-शीतल सी छाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।  | 4. Shāsan Ko Khoob Sanwārā,<br>Anushāsan Gajab Nihārā.<br>Sheetal-Sheetal See Chāyā Re,<br>Mahāprān Gurudev.   |
| 5. जीवन भर काम करूंगा, गण का भंडार भरूंगा।<br>संकल्प अटूट निभाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।   | 5. Jeevan Bhar Kām Karoongā,<br>Gan Kā Bhandār Bharoongā.<br>Sankalp Atoot Nibhāyā Re,<br>Mahāprān Gurudev.  |



6. श्रम पल-पल अविकल चलता, अनुभव का सुरतरु फलता।  
पौरुष का मूल्य बढ़ाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।
6. Shram Pal-Pal Avikal Chaltā,  
Anubhav Kā Surtaru Phaltā.  
Pourush Kā Mulya Badhāyā Re,  
Mahāprān Gurudev.
7. जग परिवर्तन का प्यासा, तुमसे थी उसको आशा।  
यह कैसा दृश्य दिखाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।
7. Jag Parivartan Kā Pyāsā,  
Tumse Thi Usko Āshā.  
Yah Kaisā Drishya Dikhāyā Re,  
Mahāprān Gurudev.
8. 'तुलसी' यह नाम पियारा, तुलसी का नाम सहारा।  
अद्भुत सौरभ महकाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।
8. 'Tulsi' Yah Nām Piyārā,  
Tulsi Kā Nām Sahārā,  
Adbhut Sourabh Mahkāyā Re,  
Mahāprān Gurudev.
9. तुम भिन्न देह से स्वामी, आत्मा के अन्तर्यामी।  
जागृति का पाठ पढ़ाया रे, महाप्राण गुरुदेव।।
9. Tum Bhinn Deh Se Swāmi,  
Ātma Ke Antaryāmi,  
Jagriti Kā Pāth Padhāyā Re,  
Mahāprān Gurudev.
10. तुम जीवन के निर्माता, प्रभु! मेरे भाग्य विधाता।  
है अलख अगोचर माया रे, महाप्राण गुरुदेव।।
10. Tum Jeevan Ke Nirmātā,  
Prabhu! Mere Bhāgya Vidhātā.  
Hai Alakh Agochar Māyā Re,  
Mahāprān Gurudev.
11. गुरुवर की बढ़े प्रतिष्ठा, यह 'महाप्रज्ञ' की निष्ठा।  
जय विजय-ध्वज लहराया रे, महाप्राण गुरुदेव।।
11. Guruvar Kee Badhe Pratishthā,  
Yah 'Mahāpragya' Kee Nishthā,  
Jay Vijaya-Dhwaj Lahrāyā Re,  
Mahāprān Gurudev.

**आपको करना है :**

यह गीत क्रमबद्ध एवं लयबद्ध सीखना है।

**You have to do :**

This Verse to be learnt in tune rhythmically.

## पाठ 3

### पचीस बोल (9 से 13)

### Pachees Bol (9-13)

#### नौवां बोल : उपयोग बारह

#### Nauvān Bol : Upyog Bārah

##### पांच ज्ञान

- |                |                   |
|----------------|-------------------|
| 1. मति ज्ञान   | 4. मनःपर्यव ज्ञान |
| 2. श्रुत ज्ञान | 5. केवल ज्ञान     |
| 3. अवधि ज्ञान  |                   |

##### Pānch Gyān

- |                |                     |
|----------------|---------------------|
| 1. Mati Gyān   | 4. Manahparyav Gyān |
| 2. Shrut Gyān  | 5. Keval Gyān       |
| 3. Avadhi Gyān |                     |

##### तीन अज्ञान

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| 1. मति अज्ञान   | 3. विभंग अज्ञान |
| 2. श्रुत अज्ञान |                 |

##### Teen Agyān

- |                |                  |
|----------------|------------------|
| 1. Mati Agyān  | 3. Vibhang Agyān |
| 2. Shrut Agyān |                  |

##### चार दर्शन

- |                 |               |
|-----------------|---------------|
| 1. चक्षु दर्शन  | 3. अवधि दर्शन |
| 2. अचक्षु दर्शन | 4. केवल दर्शन |

##### Chār Darshan

- |                     |                   |
|---------------------|-------------------|
| 1. Chakshu Darshan  | 3. Avadhi Darshan |
| 2. Achakshu Darshan | 4. Keval Darshan  |

#### दसवां बोल : कर्म आठ

- |                     |                 |
|---------------------|-----------------|
| 1. ज्ञानावरणीय कर्म | 5. आयुष्य कर्म  |
| 2. दर्शनावरणीय कर्म | 6. नाम कर्म     |
| 3. वेदनीय कर्म      | 7. गोत्र कर्म   |
| 4. मोहनीय कर्म      | 8. अन्तराय कर्म |

#### Dasvān Bol : Karm Āth

- |                          |                 |
|--------------------------|-----------------|
| 1. Gyānāvaraniya Karm    | 5. Āyushya Karm |
| 2. Darshānavaraniya Karm | 6. Nām Karm     |
| 3. Vedniya Karm          | 7. Gotra Karm   |
| 4. Mohniya Karm          | 8. Antarāy Karm |

#### ग्यारहवां बोल : गुणस्थान चौदह

- |                                    |                            |
|------------------------------------|----------------------------|
| 1. मिथ्यादृष्टि गुणस्थान           | 8. निवृत्ति बादर गुणस्थान  |
| 2. सास्वादन सम्यग् दृष्टि गुणस्थान | 9. अनिवृत्ति बादर गुणस्थान |
| 3. मिश्र गुणस्थान                  | 10. सूक्ष्मसंपराय गुणस्थान |
| 4. अविरति सम्यग् दृष्टि गुणस्थान   | 11. उपशांत मोह गुणस्थान    |
| 5. देश विरति गुणस्थान              | 12. क्षीण मोह गुणस्थान     |
| 6. प्रमत्त-संयत गुणस्थान           | 13. सयोगी केवली गुणस्थान   |
| 7. अप्रमत्त-संयत गुणस्थान          | 14. अयोगी केवली गुणस्थान   |

#### Gyārahvān Bol : Gunasthān Chaudah

- |                                       |                                  |
|---------------------------------------|----------------------------------|
| 1. Mithyādrishti Gunasthān            | 8. Nivritti Bādar Gunasthān      |
| 2. Sās-wādan Samyag Drishti Gunasthān | 9. Anivritti Bādar Gunasthān     |
| 3. Mishra Gunasthān                   | 10. Sookshma Samp-arāy Gunasthān |
| 4. Avirati Samyag Drishti Gunasthān   | 11. Upshānt Moh Gunasthān        |
| 5. Desh Virati Gunasthān              | 12. Ksheen Moh Gunasthān         |
| 6. Pramatta Sanyat Gunasthān          | 13. Sayogi Kevali Gunasthān      |
| 7. Apramatta Sanyat Gunasthān         | 14. Ayogi Kevali Gunasthān       |





## पाठ 4

### चउव्वीसत्थव

### CHAUVISATHAVA

- |   |   |
|---|---|
| 1. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।<br>अरहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली।।                | 1. Logassa Ujjoyagare, Dhammatitthayare Jine,<br>Arhante Kittaisam, Chauvisampi Kevali.                                     |
| 2. उसभमजियं च वंदे संभवमभिनंदणं च सुमइं च।<br>पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे।।          | 2. Usabhamajiyam Cha Vande Sambhavam<br>Abhinandanam Cha Sumaim Cha<br>Paumappaham Supāsam Jinam Cha<br>Chandappaham Vande. |
| 3. सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।<br>विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।। | 3. Suvihim Cha Puffadantam<br>Siyal Sijjansa Vasupujjam Cha<br>Vimalmanantam Cha Jinam,<br>Dhammam Santim Cha Vandami.      |
| 4. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।<br>वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च।। | 4. Kunthum Aram Cha Mallim,<br>Vande Muni Suvvayam Namijinam Cha<br>Vandāmi Ritthanemim,<br>Pāsam Tah Vadhamanam Cha.       |
| 5. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा।<br>चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु।।            | 5. Evam Maye Abhithuvā<br>Vihuya-Raya-malā Paheen-jaramaranā,<br>Chauvisampi Jinavarā<br>Tithayarā Me Pasiyantu.            |
| 6. कित्ति-वंदिय-मए जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।<br>आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु।।     | 6. Kittiya Vandiya Maye<br>Je E Logassa Uttamā Siddhā.<br>Ārogga Bohilabham<br>Samāhivara Muttamam Dintu.                   |
| 7. चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा।<br>सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।      | 7. Chandesu Nimmalayara<br>Āichchesu Ahiyam Payāsayarā<br>Sāgar Var Gambhirā<br>Siddhā Siddhim Mam Disantu.                 |

### आपको करना है :

1. आपको यह पाटी क्रमबद्ध सीखनी है।
2. इसे शुद्ध उच्चारण के साथ सीखना है।

### **You have to do :**

1. This verse has to be learnt in order.
2. It should be learnt with proper pronunciation.



## पाठ 5

भिक्षु अष्टकम्  
(आचार्य महाप्रज्ञ)

BHIKSHU ASHTAKAM  
(Ācharya Mahāpragya)

1. अकम्पः संकल्पः क्वचिदपि न केनापि चलितः,  
न चित्ते चांचल्यं न च विपथगामीन्द्रियगणः।  
समं सोढा गालिः क्वचन घनमुष्टेः प्रहरणं,  
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे॥

1. Akampah Sankalpah Kwachidapi  
Na Kenāpi Chalitah,  
Na Chitte Chānchalyam Na Cha  
Vipatha Gāmindriyaganah.  
Samam Sodhā Gālih Kwachan  
Ghanamushteh Praharamam,  
Prasannātmā Bhikshur  
Nayanamavatāram Nayatu Me.

2. न रागो न द्वेषो घटितघटनासु प्रतिकृतः,  
विरोधः सद्भावे परिणतिमुपागात् प्रतिपदम्।  
न लेशः क्लेशानां समजनि निमेषं सहचरः,  
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे॥

2. Na Rāgo na Dwesho  
Ghatita Ghatanasu Pratikritah,  
Virodhah Sadbhāve Parinatimupā-  
gāt Pratipadam.  
Na Lesah Kleshānām Samajani  
Nimesham Sahacharah,  
Prasannātmā Bhikshur  
Nayanamavatāram Nayatu Me.

3. अलब्धेऽप्याहारे सुमतिरचलन्नो क्षणमपि,  
न लब्धं सुस्थानं तदपि पथि नीते स्थिरमतिः।  
न कष्टं तत्कष्टं भवति यदि चित् स्पष्टमुदिता,  
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे॥

3. Alabdheapyāhāre Sumatirachalanno  
Kshanamapi,  
Na Labdham Susthānam Tadapi  
Pathi Neete Sthiramatih.  
Na Kashtam Tatkashtam  
Bhavati Yadi Chit Spashtamuditā,  
Prasannātmā Bhikshur  
Nayanamavatāram Nayatu Me.

4. सदा स्वच्छो भावो जिनवचनभावैरपमलः,  
कृतादर्शा प्रज्ञा मतिविभवमाक्रम्य सुगता।  
न चेर्ष्या नो निन्दा गहनतमनिष्ठा स्वचरिते,  
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे॥

4. Sadā Swacchho Bhāvo  
Jinavachana Bhavaira Pamalah,  
Kritādarshā Pragya  
Mativibhavamākramya Sugatā.  
Na Chershyā No Nindā  
Gahanatamanishtā Swacharite,  
Prasannātmā Bhikshur  
Nayanamavatāram Nayatu Me.



5. न सा काम्या बुद्धिर्भवति खलु या बंधनिरता,  
प्रशस्यां तां मन्ये भवति च यतश्चिद् विकसिता।  
स्वचैतन्ये निष्ठा प्रशमसुखवृष्टेरनुभवः,  
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे॥

5. Na Sā Kāmyā Buddhirbhavati  
Khalu Yā Bandhniratā,  
Prashasyām Tām Manye  
Bhavati Cha Yatashchid Vikasitā,  
Swachaitanye Nishthā Prashama  
Sukh Vrishter Anubhavah,  
Prasannātmā Bhikshur  
Nayanamavatāram Nayatu Me.

6. ज्वरो यस्याध्वानं सततमविगानं विहितवान्,  
निराशा संन्यस्ता सरिति रवितापेन सुतराम्।  
प्रकाशः सम्प्राप्तो गहनतिमिरे चैत्यनिलये,  
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे॥

6. Jwaro Yasyādhwānam  
Satatamavigānam Vihitavān,  
Nirāshā Samnyastā Sariti  
Ravitāpena Sutarām.  
Prakāshah Samprāpto  
Gahanatimire Chaitya Nilaye,  
Prasannātmā Bhikshur  
Nayanamavatāram Nayatu Me.

7. अगम्यं यन्नाम प्रबल तपसा संचितयशो,  
न शेषाः संक्लेशा विलयमुपयान्ति स्मरणतः।  
नयन् ॐ ऐं ॐ ॐ अमलमनसार्हं सवलयं,  
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे॥

7. Agamyam Yannām  
Prabala Tapasā Sanchitayasho,  
Na Seshāh Sankleshā  
Vilayamupayānti Smaranatah.  
Nayan Om Eng Om Om  
Amalamanasarham Savalayam,  
Prasannātmā Bhikshur  
Nayanamavatāram Nayatu Me.

8. मतिः सिद्धा शुद्धा भवतु प्रतिबुद्धा प्रतिपलं,  
मनो हित्वा भ्रान्तिं व्रजतु सुखदां शांतिममलाम्।  
सदा ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्फुरतु नितरां भावनिचये,  
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे॥

8. Matih Siddhā Shuddhā  
Bhavatu Pratibuddhā Pratipalam,  
Mano Hitwa Bhrāntim  
Vrajatu Sukhadām Shantimamalām.  
Sada Hring Hring Hring Hring  
Sfuratu Nitaram Bhavnichaye,  
Prasannātmā Bhikshur  
Nayanamavataram Nayatu Me.

### आपको करना है :

1. आपको ये श्लोक क्रमबद्ध सीखने हैं।
2. ये श्लोक शुद्ध उच्चारण के साथ सीखने हैं।

### You have to do :

1. These verses to be learnt in order.
2. These verses should be learnt with correct pronunciation.



## पाठ 6

आचार्य भिक्षु

ĀCHĀRYA BHIKSHU

- प्रश्न 1. आचार्य भिक्षु का जन्म कब हुआ?  
उत्तर : आषाढ़ शुक्ला 13, संवत् 1783 को हुआ।
- प्रश्न 2. आचार्य भिक्षु का जन्म कहाँ हुआ?  
उत्तर : राजस्थान के पाली जिले के कंटालिया गांव में हुआ।
- प्रश्न 3. आचार्य भिक्षु के माता-पिता का क्या नाम था?  
उत्तर : उनकी माता का नाम दीपां बाई एवं पिता का नाम बल्लु शाह था।
- प्रश्न 4. आचार्य भिक्षु का गोत्र कौन सा था?  
उत्तर : वे संकलेचा-ओसवाल थे।
- प्रश्न 5. आचार्य भिक्षु ने सर्वप्रथम दीक्षा कब, किसके पास ली?  
उत्तर : उन्होंने सर्वप्रथम दीक्षा संवत् 1808 में आचार्य रघुनाथजी के पास ली थी।
- प्रश्न 6. आचार्य भिक्षु को बोधि कब एवं कहाँ मिली?  
उत्तर : सं. 1815 में राजनगर (मेवाड़) में।
- प्रश्न 7. आचार्य भिक्षु ने अभिनिष्क्रमण कब व कहाँ किया?  
उत्तर : चैत्र शुक्ला 9, सं. 1817, बगड़ी (मारवाड़) में।
- Q 1. When was Āchārya Bhikshu born?  
Ans. On Ashādh Sukla 13 in 1783 V.S.
- Q 2. Where was Āchārya Bhikshu born?  
Ans. In a village called Kantāliyā of the district Pāli in Rajasthān.
- Q 3. What was the name of Āchārya Bhikshu's mother and father?  
Ans. His mother's name was Deepā Bai and his father's name was Ballu Shāh.
- Q 4. To which gotra did Āchārya Bhikshu belong?  
Ans. He was a Sanklechā Oswāl.
- Q 5. Where and when was Āchārya Bhikshu initiated for the first time?  
Ans. His first initiation was in Samvat 1808 with Āchārya Raghunāth ji.
- Q 6. When and where did Āchārya Bhikshu attain Bodhi (enlightenment)?  
Ans. In Samvat 1815 at Rajnagar (Mewar)
- Q 7. When and where did Āchārya Bhikshu attain Abhiniskraman?  
Ans. On Chaitra Sukla 9 in 1817 V. S. at Bagdi in Mārwar.



- प्रश्न 8. आचार्य भिक्षु ने पुनः दीक्षा कब व कहां स्वीकार की?  
उत्तर : आषाढी पूर्णिमा, सं. 1817, केलवा (मेवाड़) में।
- Q 8. When and where was Āchārya Bhikshu re-initiated?  
Ans. On Āshādhī Purnimā in 1817 V. S. at Kelwā in Mewār.
- प्रश्न 9. आषाढी पूर्णिमा के दिन कितने साधु थे?  
उत्तर : तेरह।
- Q 9. How many monks were on Āshādhī Purnimā?  
Ans. Thirteen.
- प्रश्न 10. आचार्य भिक्षु का स्वर्गवास कब हुआ?  
उत्तर : भाद्रपद शुक्ला 13, संवत् 1860 को।
- Q 10. When did Āchārya Bhikshu attain heavenly abode?  
Ans. On the Bhādrapad Sukla 13 in 1860 V. S.
- प्रश्न 11. आचार्य भिक्षु का स्वर्गवास कहां हुआ?  
उत्तर : सिरियारी (पाली-राजस्थान) में।
- Q 11. Where did Āchārya Bhikshu die?  
Ans. At Siriyāri in Pāli (Rajasthān).
- प्रश्न 12. आचार्य भिक्षु के प्रसिद्ध नाम कौन से हैं?  
उत्तर : भिक्षु, भीखणजी, स्वामीजी।
- Q 12. What are Āchārya Bhikshu's famous names?  
Ans. Bhikshu, Bhikhanji, Swāmiji.
- प्रश्न 13. आचार्य भिक्षु के उत्तराधिकारी कौन थे?  
उत्तर : आचार्य भारमलजी स्वामी।
- Q 13. Who was Āchārya Bhikshu's Successor?  
Ans. Āchārya Bhārmalji Swami.

## पाठ 7

### सामान्य ज्ञान

### GENERAL KNOWLEDGE

प्रश्न 1. 'रजोहरण' किस काम आता है?

उत्तर : अंधेरे में दिखाई नहीं देता उस समय साधु 'पूजते' अर्थात् जमीन साफ करते हुए चलते हैं ताकि चींटी आदि कोई भी जीव पैर के नीचे आकर मर न जाए।

Q 1. What is the 'Rajoharan' used for?

Ans. When it is dark, the sadhus walk with the help of the 'Rajoharan'. They gently brush the ground in front of them so that they do not step on any unseen ant or insect which may be present there to protect them from dying.

प्रश्न 2. रजोहरण जैसी एक छोटी सी चीज और होती है, वह क्या है?

उत्तर : उसे 'पूजनी' या 'प्रमार्जनी' कहते हैं। यह पूजने में मुख्यतः हाथ और पांव फैलाते समय काम आती है।

Q 2. There is another smaller thing like the 'Rajoharan'. What is that?

Ans. It is called 'Punjani' or 'Pramārajani'. This is mainly used while stretching hands and legs.

प्रश्न 3. 'मुखवस्त्रिका' क्यों रखते हैं?

उत्तर : अहिंसा के लिए। खुले मुंह बोलने से बाहर वायु के जीवों की होने वाली हिंसा से बचने के लिए मुखवस्त्रिका बांधते हैं। यह एक शिष्टाचार भी है कि ऐसा करने से दूसरों पर थूक न उछले।

Q 3. Why is the 'Mukhvastrikā' used?

Ans. For non-violence. The mukhvastrika is used so that the small insects which are in the air do not get unnecessarily hurt. It is also decent because the other people do not get spit on them.

प्रश्न 4. 'गोचरी' किसे कहते हैं?

उत्तर : साधुओं की भिक्षा विधि को गोचरी कहते हैं।

Q 4. What is 'Gochari'?

Ans. The way of sadhus asking for food (as alms) is called 'Gochari'.

प्रश्न 5. साधुओं की भिक्षा विधि क्या है?

उत्तर : जैन साधु शुद्ध भिक्षा लेते हैं।

Q 5. What is the Sadhus way of asking for alms?

Ans. A Jain sadhu takes only pure alms.

प्रश्न 6. 'शुद्ध' का क्या अर्थ है?

उत्तर : (i). जिस घर में मांस आदि अभक्ष्य पदार्थ न बनते हों।  
(ii). भोजन साधु के लिए बना हुआ न हो।  
(iii). दी जाने वाली वस्तु कच्चे पानी, अग्नि, हरियाली, नमक आदि सचित्त वस्तु का स्पर्श न करती हो।  
(iv). भिक्षा देने वाला किसी प्रकार की हिंसा न करे, जैसे - वस्तु को फूंक मारना, ऊंचे से गिराना आदि।

Q 6. What is the meaning of 'pure'?

Ans. The meaning of pure is --  
(i) There should no preparation of non-veg food in that house.  
(ii) The food should not be cooked for the sadhus.  
(iii) The offered food should not touch unboiled (Kachha) water, fire, green articles, salt or any (sachitta) unboiled thing.  
(iv) The person offering alms should not do anything violent. For eg. blowing on the food or pouring or offering from much too above.



- प्रश्न 7. 'आशातना' का क्या अर्थ है?  
उत्तर : असद् या अशिष्ट व्यवहार को 'आशातना' कहते हैं।
- Q 7. What is the meaning of 'Āshātanā'?  
Ans. Unproper or Untrue behaviour is called 'Āshātanā'.
- प्रश्न 8. 'खमत-खामणा' किसे कहते हैं?  
उत्तर : अपनी गलती के लिए क्षमा मांगना व दूसरों की गलती को क्षमा करना।
- Q 8. What is khamat-Khāmnā?  
Ans. To ask for forgiveness for one's mistake and to forgive others for their mistake.
- प्रश्न 9. महाप्राण ध्वनि की विधि क्या है?  
उत्तर : श्वास भर कर नाक से छोड़ते हुए भ्रमर की तरह गुंजन करना।
- Q 9. What is the way of doing Mahāprān dhvani?  
Ans. Take a deep breath and breathe out through the nose making a humming sound like a bumble bee.
- प्रश्न 10. महाप्राण ध्वनि का आवाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?  
उत्तर : आवाज मधुर होती है।
- Q 10. What is the effect of Mahāprān dhvani on our voice?  
Ans. Our voice becomes melodious.
- प्रश्न 11. महाप्राण ध्वनि का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?  
उत्तर : मन शांत होता है। स्वभाव अच्छा होता है। स्मृति का विकास होता है।
- Q 11. What is the effect of mahāprān dhvani on our life?  
Ans. Mind becomes relaxed. Behaviour becomes good. Memory improves.
- प्रश्न 12. 'प्रेक्षा' का अर्थ क्या है?  
उत्तर : गहराई से देखना।
- Q 12. What is the meaning of 'Prekshā'?  
Ans. To see deeply.
- प्रश्न 13. 'कायोत्सर्ग' क्या है?  
उत्तर : आराम की सही विधि तथा तनाव दूर करने का अचूक उपाय।
- Q 13. What is Kāyotsarg?  
Ans. The correct way of relaxing and the most effective way of removing tension.
- प्रश्न 14. पढ़ाई में मन लगाने हेतु किस रंग का ध्यान करना चाहिए?  
उत्तर : ज्ञान केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान।
- Q 14. On which colour should we meditate to increase interest in studies?  
Ans. Yellow colour on Gyān Kendra.
- प्रश्न 15. नैतिक कौन होता है?  
उत्तर : जो जीवन मूल्यों को अपने आचरण में उतारता है।
- Q 15. Who is a moralistic person?  
Ans. One who follows the value systems and behaves accordingly.



प्रश्न 16. हमें किस-किसका आदर करना चाहिए?

उत्तर : हमें अपने माता-पिता, गुरुजनों तथा महापुरुषों का आदर करना चाहिए।

Q 16. Whom should we respect?

Ans. We should respect our parents, our gurus and the great souls.

प्रश्न 17. जैनों के प्रमुख धार्मिक पर्वों के नाम बताइए?

उत्तर : जैनों के प्रमुख धार्मिक पर्व चार हैं :

1. महावीर जयंती
2. अक्षय तृतीया
3. पर्युषण-संवत्सरी
4. महावीर निर्वाण दिवस- दीपावली

Q 17. Name the main religious festivals of Jains?

Ans. There are four main religious festivals of Jains.

1. Mahāvīr Jayanti
2. Akshay tritīyā
3. Paryushan Samvatsari
4. Mahavir Nirvān Diwas–Deepāwali

प्रश्न 18. तेरापंथ के प्रमुख पर्व कौन से हैं?

उत्तर : तेरापंथ के प्रमुख पर्व पांच हैं –

1. तेरापंथ स्थापना दिवस
2. विकास महोत्सव
3. चरमोत्सव
4. मर्यादा महोत्सव
5. पट्टोत्सव

Q 18. Name the main festivals of Terāpanth?

Ans. There are five main festivals of Terāpanth.

1. Terāpanth Sthāpana Diwas
2. Vikās Mahotsav
3. Charmotsav
4. Maryādā Mahotsav
5. Pattotsav

## पाठ 8

### प्रेक्षाध्यान : चैतन्य केन्द्र

### PREKSHĀ DHYĀN : CHAITANYA KENDRA

चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा प्रेक्षाध्यान का महत्वपूर्ण प्रयोग है। यह जागरण का प्रयोग है। प्रेक्षाध्यान में तेरह चैतन्य केन्द्रों को खोजा गया है जो हमारे शरीर के विभिन्न भागों में स्थित हैं।

Chaitanya Kendra Preksha is an important technique of Preksha Dhyān. It is a technique for awakening one self. Preksha Dhyān has found thirteen Chaitanya Kendras which are located in various parts of our body. They are as follows :-

<u>चैतन्य केन्द्र</u>	<u>मानव शरीर में स्थिति</u>
1. शक्ति केन्द्र	पृष्ठरज्जु का अंतिम छोर
2. स्वास्थ्य केन्द्र	पेटू का मध्य भाग
3. तैजस केन्द्र	नाभि
4. आनन्द केन्द्र	हृदय के पास, फेफड़ों के बीच गड्ढा
5. विशुद्धि केन्द्र	कंठ का मध्य भाग
6. ब्रह्म केन्द्र	जीभ का अग्र भाग
7. प्राण केन्द्र	नासाग्र
8. अप्रमाद केन्द्र	कानों का भीतरी भाग
9. चाक्षुष केन्द्र	दोनों आँखों का भीतरी भाग
10. दर्शन केन्द्र	दोनों भ्रुकुटियों का मध्य भाग
11. ज्योति केन्द्र	ललाट का मध्य भाग
12. शांति केन्द्र	सिर का अग्र भाग
13. ज्ञान केन्द्र	चोटी का स्थान

### Chaitanya Kendra Location in human body

1. Shakti kendra	The base of our spine
2. Swāsthya kendra	Centre portion of the abdomen
3. Tejas kendra	Navel
4. Ānand kendra	Near the heart, in the centre between the lungs.
5. Vishuddhi kendra	The centre of the throat
6. Brahma kendra	Tip of the tongue
7. Prān kendra	Tip of the nose
8. Apramād kendra	The inside of the ears
9. Chākshus kendra	The inside portion of both the eyes
10. Darshan kendra	The centre of eyebrows
11. Jyoti kendra	The centre of the forehead
12. Shānti kendra	Front of the head
13. Gyān kendra	Top of the head

### आपको करना है :

1. चैतन्य केन्द्रों के नाम क्रमबद्ध सीखने हैं।
2. शरीर में इन केन्द्रों की जो स्थिति है, उसे समझना है।

### You have to do :

1. The names of the Chaitanya Kendras to be learnt in order.
2. The location of each Kendra in the parts of the body to be understood.



शिक्षा के दो रूप हैं - ग्रहण शिक्षा, आसेवन शिक्षा।  
सूत्र-पाठ का शुद्ध उच्चारण व उसका अर्थबोध ग्रहण शिक्षा है। जो कुछ सुना, समझा व याद किया, उसे जीवन में उतारना आसेवन शिक्षा है।

वृक्ष की जड़ सूख जाने पर शाखा-प्रशाखा  
सब कुछ सूख जाती है। व्यक्ति के भीतर से  
विनय का गुण निकल जाने पर सब गुण  
समाप्त हो जाते हैं।

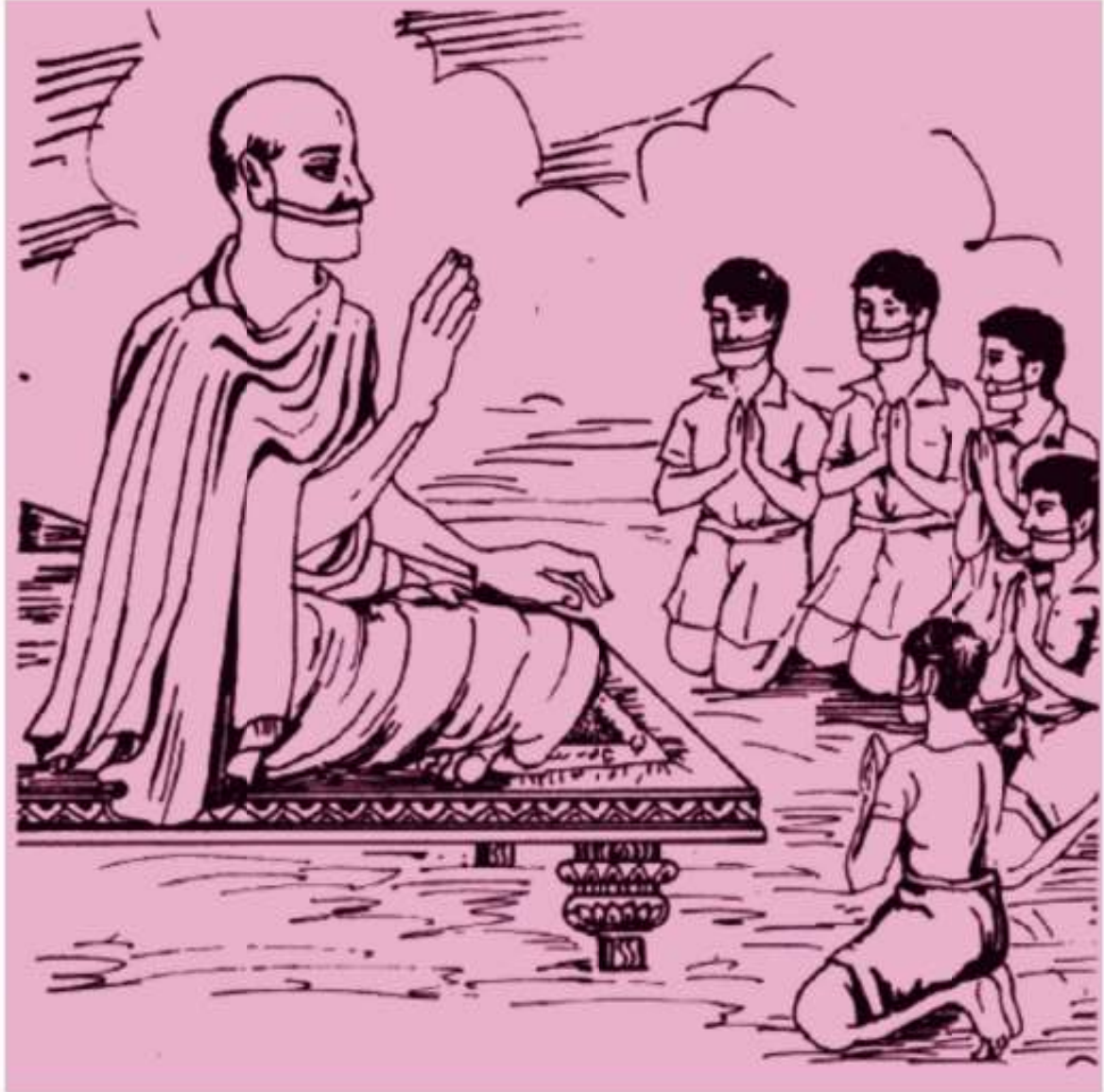


विद्यार्थी जीवन ही, सारे जीवन की नींव।  
दिखलाना है तुम्हें देश को, जो आदर्श सजीव।।  
विद्या और विनय का संयोग सोने में सुगंध है।

चारों ओर विकृति के संस्कार हावी हैं। नैतिक मूल्यों को  
झकझोरने वाले साधन भी प्रचुर मात्रा में हैं। लौकिक विद्या के  
साथ भोगवाद का क्रम भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। ऐसे में  
ज्ञानशाला एक शक्तिशाली उपक्रम है।

- ज्ञानशाला को आधुनिक एवं वैज्ञानिक रूप दिया जाए।
- आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि का विकास हो।
- उसमें तत्त्व व दर्शन के साथ आचार संहिता भी जोड़ी जाए।
- ज्ञानशाला मात्र शिक्षण का उपक्रम ही नहीं जीवन विज्ञान है।





## युग पुरुष के अमृत बिन्दु

शिक्षा की दुर्गति या असद्गति देख मेरे मन में बच्चों को संस्कारी बनाने की बार-बार आ रही है। संस्कारों के बिना शिक्षा केवल भार बन जाएगी। गधे पर चंदन का भार डाल दिया जाए तो वह भार का ही अनुभव करेगा सुगन्ध का नहीं।

प्रत्येक अभिभावक को अपने बालकों को लौकिक शिक्षा के साथ-साथ संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला एवं आध्यात्मिक शिविरों में अवश्य भेजना चाहिए।

- आचार्य तुलसी